

# हरिगंधा

मासिक पत्रिका

अंक : 379, मार्च, 2026

फाल्गुन-चैत्र 2082-83

महिला विशेषांक

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी



## सुगली

जो

काम आसान लगै सैं, ओ हे सबते मुस्कल हो सैं।'' इस बात नै दोनू बाळकां ने सोचण ताई मजबूर कर दिया। अमूमन तो वे घणखरी बातयां नै समझ ही ले सैं। शहरां मै जिस तरह की बात करी जा सैं ना, वा तो बाळकां कै समझ आ ज्या सैं पण जब तैं गाम सू बाळकां की दादी आई सैं, उनकी समझ गडबडा गी सैं। दादी के मामले मे सबद तो बाळकां के समझ आ ज्यां सैं मण बाळकां के लिए बात की गहराई समझणां टेड़ी खीर साबित हो रह्या सैं। आज भी यौह हुया। बात सरू कित तैं हुई थी अर बढ़ते-बढ़ते कित की कित ही पहुंचगी।

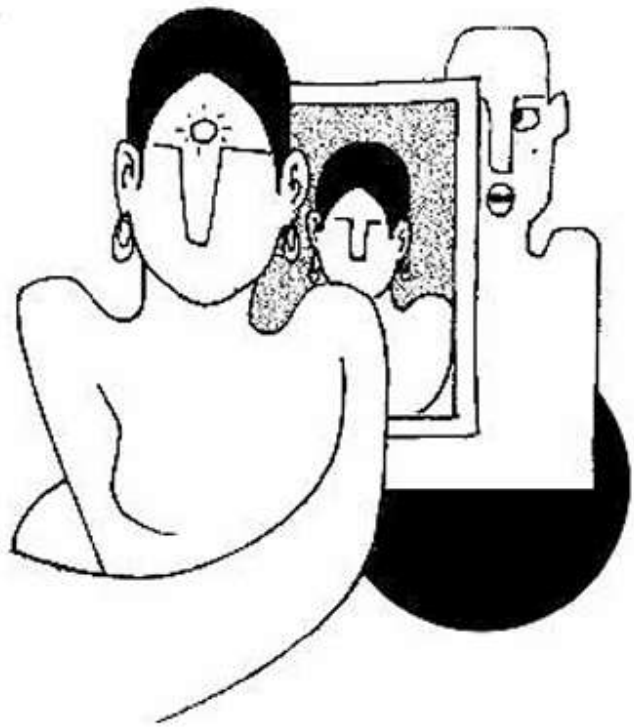
नीरजा ब्याह के बाद तैं ही अपणें आदमी के साथ दिल्ली आण के रहण लागगी थी। उसके दोनू बाळक उरै ही हुये थे। धणी-बीर राजस्थान के सैं इस करके वा अपणें आदमी त अपनी बोली में ही बात करै सैं। बाळक आजकल की बोली बोलै सैं मतलब सहर मै बोली जाण आळी अंग्रेजी मिली हुई हिन्दी। बाळकां ने राजस्थानी समझ तो आवै सैं मण या भाषा बोलणा, उनके बूते की बात कोन्या। या बात परिवार के साथ-साथ सुगली ने भी बेरा सैं।

बरसां तैं इस्सी घर में काम करते-करते सुगली नै नीरजा भाभी की ढाल घर चलाणो सीख लियो सैं। उसके काम ते खुस होकर नीरजा भाभी कदे-काऊ शाब्बासी देण खातिर कह भी दे सैं अक 'इब तो तूं मेरी परछाई ही बणगी सैं।' इस घर के बाळकां नै तो ठीक तैं याद भी कोन्या अक सुगली कद तैं उनके साथ सैं। जब तैं उनकी यादाश्त बणी, उननै सदां ते सुगली अपने घरां ही देखी सैं। घर-बाहर के रोजाना के काम हों या कोई बार-त्यूहार हो, सुगली पूरे मन तैं उरै ही काम करती दिखे सैं।

सर्दियाँ की दोफर मै उस दिन बाहर तैं सब्जी आळे की आवाख सुण कै नीरजा साग-तरकारी लेण चलीगी थी। हरी सब्जी के साथ उसने मूळी भी खरीद ली। सुगली ने धो-छील कै मूळियाँ में नमक अर नींबू लगा कै घर कां तैं देणी सुरू कर दी। टंड की धूप सेंकते परिवार नै उस दिन जी भर कै मूळी खाई। इस चक्कर मै सुगली जित बैठ कै नीरजा के परिवार ने स्वाद परोस री थी, बालकनी के उस ओड मै कीचड़ सा फैल गया।

“देखो, सुगली दीदी कितनी सुगली है।” नीरजा के बेटे नै ताळी बजा-बजा कै कहणा सुरू कर दिया। उसकी छोटी बेटी भी ताली बजाण लाग गी। बाळकां की बात सुण कै परिवार आळा भी हंसण लाग गया। सबनै हंसते देखकै सुगली भी हंस पड़ी।

राजस्थानी परिवार कै लिए किसी बीरबानी का नाम सुगली होणा, अचरज की बात थी। इसी करकै परिवार आळे जब-तब सुगली कै नाम ने लेकै हंसी कर लिया करै थे। बड़ों की शह पा कै बाळक भी मजाक कर लिया करै थे। नीरजा भाभी नै सुगली तै जाणै कितनी बार उसका नाम रखण कै पीछे की कहानी पूछी थी। सुगली ने इस बारै में कोई जानकारी नहीं थी। उसकी मासूमियत देखकै नीरजा भाभी कई बार कह्या करती, ‘अपणा नाम रखण की कहाणी पता कर।’



जिंदा रहण कै संघर्ष करती सुगली के धोरै इतणे तो संसाधन ही नहीं थे जिनतै वा अपने नाम की कहाणी को पतो लगावन्ती। वा तो रोट्टी कै लिए भी इसी सारस्वत परिवार पर निर्भर करै थी। गिणती की छुट्टी आळी नौकरी मै उसके धोरै इतणा टेम ही नहीं था क वा छुट्टी लेकै अपने नाम की कथा को पतो लगावन्ती। घणीं ही बार सोच्या करै थी क गाम मै जा कर अपणीं माँ तै कै बूझगी? वा सोचती क माँ तै किस तरह्यां पूछूं अक मेरौ नाम गंदगी के नाम पर क्यूं राख्यो? जब-जब नीरजा भाभी कै परिवार मै उसके नाम पर बात हुई, सुगली इस बारे में सोच्या जरूर करती पण ज्यादा देर तक इस पर सोचण का उसके धोरै बखत नहीं बच्या करता। इसकै पीछे और भी कई कारण थे।

“माँ नै भी मेरे नाम धरण की कथा को कित बेरो होगो! खुद मेरो अपणों बेटो हुयो थो, जद मैं भी तो अपनी मजी तै उसका नाम नहीं रख सकी थी। आज सै बीस बरस पहले जब मेरी इच्छा नहीं मानी गई तब चालीस-ब्यालीस बरस पहले मेरी माँ की मरजी नै कूण सुणै था!” इतणे सोच-विचार कै बाद ही वा अपणी बात पर हंस दे सै। इस हंसी मै कोई दुख नहीं होता और ना ही कोई कमतरी की बात सुणाई देवे सै। इसके बावजूद कुछ मजबूरी की सी बात तो रहै ही सै। उसकी हंसी बाळकों की समझ तै बाहर ही रज्या सै।

‘इब कूणसी मेरी जनम पत्री बणणी सै जिसकै लिए नाम, और नाम का अरथ दूढ़ण जाऊंगी।’ न्यू कह कै वा बात नै टालण की कोसिस करया करै सै।

सारस्वत परिवार की नींद भी ठीक सै नहीं खुलती जब सुगली उनकै घर पहुंच ज्याय सै। नए दिन मै दरवाजे की पहली घंटी बजतै ही सब समझ ज्यां सै अक भार कूण आयो सै। दरवाजे की घंटी बजते

ही सब ताई अपने आप खबर पूँच ज्याय सै अक नयो दिन निकळ यायो सै अर सुगली भी आ पौँची सै । उसके आवंतां ही घर के काम कै बोझ तळे दबी जा री नीरजा भाभी नै रसोई की भागदौड तै थोड़ो आराम मिल ज्या सै । नीरजा बाळकां नै सकूल खातर तयार करण मंड ज्याय सै । साथ की साथ वा बाळकां का टीपन भी पैक करती ज्याय सै अर बाकी को काम सुगली समहाळ ले सै ।

‘भाभी, मेरो छोरा घर कै भार ज्यादा रह सै ।’ कदे-काऊ सुगली अपनी परेशानी नीरजा तै कै दिया करे थी । घणखरी तो वा अपने बेटे ने प्रेम करण आळी माँ ही हुया करे थी मण कदे-काऊ इस्सा नहीं भी हो था । इस घर मै बाळकां ने चहकते देखती तो उसके मन कै घाव हरे हो ज्याया करते ।

‘भाभी, के जाने मेरो छोरो किस माटी को बण्यो सै । उसनै मेरे साथ बैठणो एक मिन्ट ना सुहावै ।’ एक दिन दुखी मन तै सुगली ने अपने मन की बात कही । इतणो कह कर कुछ देर तो वा चुप बैठी रही, फेर चानचुक्यां ही वा रोवण मंड गी । इसे मौकां पै आमतौर पै नीरजा चुप रहकै सुगली की बात सुणती रह सै । इतणे लंबे साथ तै नीरजा समझण लाग गी सै अक सुगली को मन चाहे तौ कभी-कभार वा अपने बेटे की बुराई कर लै सै लेकिन अपने बेटे के लिए किसी ओर का कुछ भी कहा, उसके बर्दाश्त नहीं होता ।

‘तू उसनै कुछ कहती क्यूँ नहीं ?’ एकबार नीरजा ने उसतै कही थी ।

‘मेरै आगे तो वो एकदम शांत रहै सै । कोई बदमासी नहीं, गाळी-गलौज नहीं, किसी तै लड़ाई-झगड़ा नहीं । किस बात पर टोकूँ उसनै ? मेरै आगे तो उसकी जीभ तालू तै चिपक ज्याय सै । दुनिया बुराई करे सै मेरे छौरे की । वो कलेक्टर तो बण नहीं गया जो उसते चिढ़ते लोग झूठ बोलते हौंगे । कुछ तो सच भी होगा ही न भाभी ।’ रूंधे गळे तै सुगली क री थी ।

‘हम तो उसकी पढ़ाई का खर्चा ही उठा सकै थे, जो उठा ही रह्या सां । रूपए-पैसे की मदद कर सकां सा । बाकी तो तन्ने ही देखणा है । जै वो तेरा कहा नहीं मानता तो उसनै अपने साथ लेया, हम समझा कै देख ल्यां ।’ सुगली की परेशानी सुण कै एक दिन नीरजा नै उसतै कहाया । अगले ही दिन सुगली अपने बेटे कै साथ हाजिर थी ।

नीरजा अर उसके आदमी नै सुगली का बेटा जितना समझा सकै थे, समझाया । जवान खून कब किसकी सुणै सै मण माँ कै लिहाज मै बेटा चुप रह्यो । अगली बार जद फेर माँ को मन दुख्यो, अर वा रोई, नीरजा नै उसका बेटा फेर बुलवा लिया । इस बार नीरजा नै सुगली के बेटे तै खूब लानतें भेजीं । उसनै अपनी माँ की जिम्मेदारी उठाण खातिर समझायो, माँ को ध्यान रखण खातिर कह्यो । पहले तो छोरो चुप रह्यो मण नीरजा की कही आखरी बात उस कै मन मै फांस सी चुभ गी ।

‘हम थारै घर तो चोरी नहीं कर रह्या । मेरे बाप नै बीच में ल्याण का के मतबल ?’ छोरो शेर की ढाल दहाड रो थो । देर ताई चुप बैठे छोरै मै बाप क नाम पर चानचुक्यां ही विस्फोट सा हो गया । माँ अपने बेटे नै समझाती रही । नीरजा नै अपने धणी कै ऑफिस मै नौकरी का लालच भी दिया मण जवानी की ओड कदम बढ़ाता बेटा, किस्सै की बात सुणन नै तैयार नहीं था । छौरा चल्या गया अर उसी दिन तै सुगली का व्यवहार भी बदळ गया ।

‘माँ के कळेजे का टुकड़ा है । जितना कहणा-सुणना है, वा खुद कहेगी मण किसी ओर का कहा

एक सबद भी उसै बर्दाश्त नहीं होगा।' उस दिन कै बाद सै नीरजा अक्सर कह्या करती।

'ना भाभी। वो मेरै कळेजे का टुकड़ा है मण वो थम दोनूआं तै बतमीजी नहीं कर सकता। इब उसनै इस चोखट पै कदे नहीं ल्याऊं।' दुखी मन तै सुगली बोली।

'भाभी सारे दिन तो मैं ऊरै काम लागी रहूं सूं। सांझ नै घर पौंचते ही उसकी कळह झेलणी पड़ै सै। कदे किस्सी की छोरी छेड़न की सिकायत मिले सै तो कदे कुछ ओर। पहले तो वो मोहल्ले के छोरां का ही लीडर बण्या फिरै था मण इब तो उसके रंग ही अलग हो रै सैं।' दुखी मन तै सुगली बता रही थी। वा जब अपणा दुखड़ा सुणावे सै, नीरजा दिमागी तौर पै अपणा ध्यान ओर कितै ही लगा ले सै। ना वा सुगली का दुख सुणैगी और ना परेसानी होगी।

'भाभी, दो दिन तै छोरो घर नहीं आयो। मन ना लाग रह्यो किते भी।' दोफर की रोटी खाते टेम सुगली बोली।

'उसकै यार-दोस्तां तै बेरो कर, वे ही बता सकें सै।' नीरजा कै धोरे सुगली की परेसानी का यो ही ईलाज था।

सांझ होते-होते सुगली कै फोन प अलग-अलग नंबरों तै फोन आण लाग गे। एक अनजान नंबर तै कई बार फोन आ लिये थे। तंग आ कै इबके उसनै फोन ठा ही लियो। 'पुलिस' के नाम सै ही सुगली घबरा गी। नीरजा खुद चला कै उसकै साथ पुलिस टेसन गई। सुगली कै बेटे की तलाश मै पुलिस उरे-परे हर ओड छापेमारी कर री थी। अखर गरफ्तारत तेव तेह तेणोह तेथ ते पुलिसत मेहनत करवा कै जल्दी ही वो भी गिरफ्तार कर लियो गयो। हर ओड कै समाचारां मै उसके चर्चे हो रे थे। देर सांझ घरा जाती जिस लड़की क गैंगरेप अर मर्डर नै देश दहला दिया था, सुगली कै छोरे नै पकड़ते ही उस अपराध के सारे आरोपी पकड़ लिए गए थे।



इस खबर कै आवंतां ही सुगली की हालत खराब हो गी। बेटे की इस हरकत कै बारे मै खबर होते ही उसकै भीतर तै बेटे कै लिए ममता खतम हो गी। अपने घर मै जो संताप उसनै झेल्या था... जिस जेठ नै पति के बड़ु भाई का मान दिया करै थी, उससी नै सारी सीमाएं तोड़ दी थीं। जिस बेटे नै अच्छे संस्कार देणे खातर उसनै घर-परिवार ते वनवास ले लिया था, उसी छौरे नै औरत सरीर की इज्जत नही करी। बल्कि ओ तो अपने ताऊ तै भी आगे निकळ गया।

उस रात सुगली खून कै आँसू रोई। ना कुछ खाया, ना पीया। बस रोवती रही। खूब रोई, खूब रोई और खूब ही रोई। उसनै इस सबकै लिए खुदको भी कसूरवार ठहराया। रो-रो कै जब हार गी तब हालात पै रौणे कै बदले उसने दोषी का दोष समझ्या। आखर मै अपने जीवन्ते बेटे का श्राद्ध कर दिया।

अपने बेटे तै उसनै नफरत हो गी थी। जितणा वा बेटे तै दूरी बनाणा चाह थी, अड़ौस-पड़ौस अर

पहचान आळे उतणे ही ज्यादा बेटे का जिकर करते। कितने ही लोकां नै उसते रिश्ता खतम कर लिया था। पहले नीरजा भाभी कै घर तै जाकर वा शाम कै टेम फल बेचने का ठेला लगाया करै थी। इस घटना कै बाद तै उसके ग्राहक टूट गे। इब उसकी पहचान 'बलात्कारी की माँ' कै नाम तै होण लाग गी थी। सबनै उसते दूरी बणा ली। सुगली अपने आप नै कटघरे मै खड्यो करती, खुदतै सवाल करती। बार-बार पूछती अक सारै हिसाब औरत की देह पर ही क्यूं हो सै? महाभारत कै युद्ध का जिम्मेदार द्रोपदी नै बणाण आळो समाज आज एक माँ कै पीछे पड रह्यो सै। बाप की गळती नही मानी ज्यादा, ना छौरे का कुसूर मान्या जा रह्या बल्कि माँ पै तो तलवार तान दी गई सै। वा सोचती रही कि आखर मै इस जुर्म कै लिए वा कसूरवार कैसे हो गी।

हर दिन सुबह-सबरे नियम तै सुगली काम पै पहुँच ज्यादा करै थी। दोफर ताई नीरजा भाभी कै घर का काम करवा कै वा अपने दूसरे काम कै लिए चली ज्यादा करै थी। कदै-काऊ ज्यादा काम होण पर नीरजा उसनै देर ताई रोक लिया करै थी। ठेले कै ग्राहक टूटण तै उसका काम बंद हो गया। उसकै सारे काम छूट गे, ठेले तै होण आळी आमदनी बंद हो गी। सुगली की परेसानी देखकै नीरजा नै सुगली अपने धौरे ही फुल टेम काम पर राख ली।

कुछ दिनां ताई सुगली उदास रही। फेर धीरे-धीरे समय कै साथ उसका जीवन भी बदळ गया। नीरजा भाभी कै घर मै उसनै परिवार जैसा मान मिल्या करै था। इन दिनां उसे अपना घर याद तो भी नही आया करै थो फेर भी झोपड़ी पै कब्जा बनाए रखणे कै लिए वा रात नै सोवण खातिर अपनी बस्ती मै चली जाया करै थी।

'भाभी, आजकळ आस-पड़ौस कै घरां मै दीमक की सिकायत आ री सै। अपनां घर भी देख ल्यां, किते दीमक चुपके तै सब कुछ ही चट कर ज्यादा।' दोफर का काम खतम करकै सुगली सटोर की ओर इसारा करते हुए बोली।

'काल देखांगा।' नीरजा नै उसकी बात टाळ दी।

'तो फेर मै गमले सुधार री सूं।' कहते हुए वा पौधां की गुड़ाई मै लाग गी। असल बात या सै अक सुगली तै खाली बैठ्या नी जाता। दोफर कै टेम जद नीरजा आराम करै सै, सुगली अपने लिए कोई ना कोई काम ढूँढ ही लै सै।

'आज फिर सुगली दीदी ने सब सूगला कर दिया।' गमलां की गुड़ाई करते हाणी फरस पर फैली माट्टी देखकै नीरजा को बेटो कहण लाग्यो।

'बोलने से पहले सोचा करो और भाषा समझे बिना बोलना तो सबसे बड़ी गलती है।' दादी माँ की आवाख तै ही वो चौंक ग्यो।

'दादी माँ सुगली तो गंदगी होता है न। इसका मतलब सुगली दीदी गंदी है। गंदगी फैलाती है।' नीरजा को अंग्रेजी मीडियम स्कूल मै पढ़ण आळो बेटो कै रह्यो थो।

'जितना हम जानते हैं, जानकारी उतनी ही नहीं होती बल्कि जानकारी की सीमा असीमित है। किसी विषय के बारे में हम जितना जानते हैं, उससे ज्यादा वह अनजाना रह जाता है।' इन दिनां बाळकां नै दादी की कही बात कम ही समझ आवै सै।

‘अब इसमें नई जानकारी कहाँ से आ गई!’ दादी की टोकाटाकी तै चिढ़कै नीरजा को बेटो बोल्यो।

‘हम तो शब्दकोश के जमाने से हैं। उसमें भी तलाशने पर सारे शब्द नहीं मिलते थे। तुम्हारे गूगल में तो सब मिल जाता है, फिर भी तुम नहीं खोजते।’ दादी नै तीसरी पीढ़ी फेर टोक दी। इबकै दादी की झिड़की तै बेटे का मुंह बण गया।

‘जिसे तुम सुगली कहते हो, वो सुगली है। बड़ी ऊ की मात्रा से जो गंदगी का पर्याय बन जाती है, वहीं छोटे उ की मात्रा लगते ही वह सुन्दरतम स्त्री, यानी सुगली हो जाती है। सुंदर वही होता है जो सुंदरता फैलाता है।’ दादी की बात सुणकै बाळकां नै नई जानकारी मिलणी ही थी। इस जानकारी तै दोनू भाण-भाई हैरान रै गे।

‘मैंने कहा था ना कि जब तक मेहनत नहीं करोगे, सब आसान लगेगा। पर बिना मेहनत किए, तुम मृत देह यानी बिना आत्मा वाले शरीर जैसे रहोगे।’ दादी की कही बात इबकै भी बाळकां नै शायद ही समझ आई हो मण जिसै या बात समझ आणी चाहिए थी, उसनै बराबर समझ आ गी थी।

सुगली का अपणै गांव की ओड का चक्कर बच गया। उसकी अपणी माँ तै सवाल करण की परेसानी खतम हो गी थी। सबतै बड़ी बात या हुई कै आज तक उसनै अपने नाम कै कारण जो सरम आया करै थी, वा सरम जाती रही। उपर तै हुयो यो अक उसे अपने आप तै प्यार-सा होण लग गया था। जिस नाम नै आज ताई उसे परेसानी मै राख्या, आज उसी नाम नै सुगली तै भौत घणी खुसी दे दी थी। दिन भर काम करते हुए उसकै हाथों मै जोश बण्या रह्या। कितणी ही बार वा कोई गीत गुनगुणाती हुई चानचुक्यां ही चुप हो गी। कितणी ही बार वा अपणै तै ही सरमा कै झेंप गी। देख्यो जाय तो बदल्यो कुछ भी नहीं थो, इसकै बावजूद सुगली कै लिए के बेरो के बदळ गया थो। मुस्कान उसकै होठों पै फैल गी थी। उस दिन काम पूरा करण कै कई देर बाद सुगली अपने घर कै लिए रवाना हुई।

यह टेम जल्दी सुबेरे बाळकां कै सकूल जाण को बखत थो। एक ओड नै नीरजा अपने बुजूर्ग सास-ससुर खातर कोरै दूध की चाय चढ़ा री थी, तो दूसरी ओड बाळकां कै नास्ते की तैयारी भी कर री थी। इसी बखत वा साथ की साथ मै बाळकां खातर सकूल कै टीपन को नास्तो भी बणा री थी। बीच मै ही उसकै याद आयी कि अपने आदमी खातिर कम दूध की चाय तो इब ताई चढ़ाई ही नहीं सै। इतणी भागदौड़ मै उसकी सांस फूलण लाग गी थी। ओर दिन सूरज निकलण तै पहले दरवाजे की घंटी बजणे का मतलब हुया करतो अक सुगली आ पौंची सै। वा आवंते ही नीरजा को आधो काम सम्हाळ ले थी। आज तै बाळकां के पेपर सरू हो रै सै। काल जाते हाणी वा कह कै गई थी, ‘भाभी, सुबेरे आऊं सूं।’ फेर...

दोनू बाळक सकूल चले गै थे। सूरज निकळ आयो थो मण इब ताई सुगली को कोई एरो-बेरो नहीं थो। नीरजा नै दो बार फोन भी करयो लेकिन उसका फोन स्विच ऑफ बता रह्या था। सास-ससुर पड़ोस कै बाग मै सुबह की सैर करकै उल्टे घर आ लियै थे, उनकै खातिर नीरजा नै दूसरी बार चाय चढ़ा दी थी। अपने आदमी की पसंद का नाश्ता बणाते-बणाते बीच मै नीरजा नै एक बार फेर उससी नंबर पर फोन लगायो। फोन लगातार ऑफ ही आतो रह्यो। सबकै नास्ते-पाणी को काम निपटा कै नीरजा नै बर्तना को मोर्चो सम्हाळ लियो। एक ओड उसनै कपड़े धोण खातिर मसीन लगाई अर दूसरी ओड दोफर

के रोटी-टूक की तैयारी शुरू कर दी। इब ताई उसनै फुर्सत नहीं मिली थी अर ना एक भी टूक मुंह में राख्यो थो। इतणो सब करते-करते उसनै महसूस हुयो कै इब उसकी हिम्मत जवाब दे री सै। 'आज मेरे तै घर की सफाई ना होगी।' उसनै अपनी सेहत के हालत खुद तै कुबूले।

'एक बजण नै आयो, इब ताई नहीं आई। कित रह गी आज वा?' झुंझळ बढ़ री थी। एक बार फेर फोन लगायो मण इस बार भी परिणाम सिफर। दिनभर वा गरहस्थी की जिम्मेदारियां तै जूझती रही। दिन ढलण नै थो। पति कै काम तै वापस आवतें ही वा ट्रे में चाय कै कप के साथ हाजिर थी। थकान पर पार पाण खातर उसनै अपने लिए भी चाय बना ली। पति नै आदतन समाचार देखण खातर टेलीविजन चालू कर लियो थो। स्क्रीन पै झुगगी-झोपड़ी दिख री थी। एक झोपड़ी कै भार बैठी बीरबानी नै देखकै नीरजा अचानक चौंक गी।

"सुगली!" उसकै मुं तै बस या ही आवाज निकळी। आवाज पूरे घर में फैल गी।

"कित सै?"

"आ गी के?" हिसे सवालां की गूंज तै घर भर ग्यो। धीरे-धीरे सारै परिवार आळे टेलीविजन कै सामने थे अर स्क्रीन पै दिख री थी, सुगली।

दरवाजे की घंटी बाजण लाग री थी। हैरान-परेशान सै परिवार को कोई आदमी इस न्यूज नै बीच में छोड़कै दरवाजो खोलण जाण नै तैयार नहीं थो। सास-ससुर तो बुजूर्ग सै, बाळक छोटे सै और पति तो थक-हार कै घर आयो थो। वैसे भी सारै सुगली की न्यूज जाणना चाहें थे, नीरजा अकेली ही थी जो इस टेम खाली थी अर इस जिम्मेदारी नै निभा सकै थी। कई बार और लगातार बजती दरवाजे की घंटी तै परेशान होकै नीरजा ही दरवाजो खोलण पौची।

उसकै सामने सोसायटी कै कुछ पदाधिकारी, चेयरमैन और मैनेजर खड़े थे। इन सबनै आयो देखकै सारस्वत जी की थकान अचानक मिट गी। चाय को कप ट्रे में वापस धरकै सारस्वत जी बैठक में आ पहुँचे। नीरजा का ससुर जी भी न्यूज बीच में छोड़कर इस मीटिंग का हिस्सा बणने कै लिए पहुँच गै थे। जाती सर्दियों की देर शाम में सोसायटी के परमुख सदस्य फरमान ल्याये थे अक काल तै सुगली का सोसायटी में आणा-जाणा मना सै। दिल्ली में हुये बलात्कार कांड का कोर्ट तै फैसला आ गया था। टेलीविजन में या ही न्यूज चाल री थी। आठ साल लाग गे थे सुपर ट्रैक कोर्ट तै फैसला आण में। सजा कै अनुसार सुगली के बेटे नै फाँसी की सजा सुनाई गई थी। 'बलात्कारी की माँ हमारी सोसायटी में नहीं आएगी। उसके सोसायटी में आने से हम सबकी बदनामी होगी।' समाज कै महत्त्वपूर्ण लोगों नै एकसाथ मिलकै यो निर्णय लियो थो।

'बलात्कारी उसका बेटा है, वह नहीं है। उसे किस बात की सजा दी जा रही है?' परिवार नै चुप बैठे देखकै नीरजा बोली।

'उसके सोसायटी में आने से हमारी सोसायटी में मिडिया भी आने लगेगी। हम सब इज्जतदार लोग हैं। हमारी बदनामी होगी।' कमेटी कै लोग अपने निर्णय पै अडिग थे।

नीरजा याद कर री थी कै जद सासू माँ की तबीयत खराब हुई थी उस टेम किस ढ़ाल सुगली नै उनका ध्यान राख्या था। हर दिन उनकी मालिश किया करै थी। बाळकां कै जूते चमकाणे हों या उनकी

फरमाइश का भोजन पकाणा हो, सुगली हमेशा आगे रहै सै। एक बार नीरजा कै बुखार चढ़ गयो थो, उस बार भी सुगली नै पूरे घर की जिम्मेदारी अकेले अपने उपर ले ली थी जबकि सोसायटी के इक्का-दुक्का लोग ही उसका हाल पूछण आए थे। जो हाल लेण आए, उनका चाय-पाणी भी सुगली नै ढ़ी किया था।

‘बेटे की गलती की सजा उसकी माँ को नहीं दी जानी चाहिए। उसका काम छूटा तो वो भूखी मर जाएगी या पेट भरने के लिए चोरी करेगी। तब भी तो हम ही कसूरवार होंगे ना।’ नीरजा सोसायटी कै सुणाए फैसले कै खिलाफ थी।

‘सारस्वत जी कामवालिओं का क्या है, एक हटाओ तो चार नई आ जाती हैं। इज्जत गई तो नहीं लौटती। भाभीजी को दूसरी कामवाली मिल जाएगी।’ अपने तर्क पै अडिग कमेटी कै सदस्य, सारस्वत परिवार नै समझा-बुझा कै वापस चलैगे।

“सुगली हर सुख-दुख मै मेरे साथ खड़ी रही। आज उस पै दुख आयो सै तो कै मैं उसको साथ छोड़ दूँ?” नीरजा कह री थी।

‘हम सोसायटी में रहें सां। उरै के नियम तो मानणे ही पड़ैगे।’ पति ने समझाण की कोसिस की।

‘मैं सोसायटी की लुगाइयों तै बात करूंगी। काल नै जै उनकै परिवार कै किसी आदमी नै ऐसी हरकत कर दी अर आदमी कै सजा होते ही उस परिवार नै भी सोसायटी तै भार लिकाड दियो जाय जद?’ नीरजा बोलती जा री थी।

‘कोई तेरो साथ नहीं देवैगे। जा, बात करके देखले।’ पति नै चिढ़ कै कही।

‘मैं एनजीओ कै धोरे जाऊंगी या महिला आयोग... सुण, तू तो मेरै साथ सै न।’ अचानक उसनै पलट कै अपने पति तै सवाल कर्यो। नीरजा कै पति नै इस सवाल की उम्मीद नहीं थी। ससुर जी चुपचाप उसनै घूरते रहे। कुछ देर ताई इंतज़ार करके नीरजा उठ खड़ी हुई।

उरै दीमक को प्रकोप बढ़ रह्यो सै। उसनै इस तरह कै जीव-जंतुआं तै लिजलिजी सी आवै सै। उसनै महसूस हो रह्यो थो अक देर ताई एक ढ़ाल बैठे रहण कै कारण वा जड़ होण लाग गी सै। जैसे दीमकां नै धरती तै उसके सरीर मै घुसण का रास्ता बना लिया हो और ईब वे उसके शरीर मै खून कै साथ-साथ बहण लाग री सै। लगातार बढ़ती दीमकां नै उसके हार्ट तक पहुँचण का रास्ता मिल गया सै। उसनै बेरा सै कै इसका परिणाम हार्ट अटैक ही होणा सै। हार्ट अटैक का मतबल मौत निश्चित सै। अचानक वा उठ खड़ी हुई। वा इस अटैक तै खुदनै बचा लेणा चाहै थी। पति नै हैरान हो कै उसकी ओड देख्या। घर मै आए घणे सारे आदमियों कै कारण बच्चे तो पहले ही सहम गे थे। इबके सास-ससुर भी उसकी इस हरकत पै अचकचा गै। इस सबके बावजूद नीरजा नहीं रूकी। उसके कदम सुगली के घर की ओर बढ़ चले। उसनै बेरा सै कै अपने घर में लगी दीमक का ईलाज उसनै खुद ही करना पड़ैगा। हो सकै सै कै दवाई की कड़वाहट पूरे परिवार नै भी झेलणी पड़ ज्य। जै इससो हुया तब भी वा अपना घर बचाणै खातर इस बिमारी का ईलाज करैगी, ज़रूर करैगी।

सम्पर्क : 4102, लॉर्ड्स अपार्टमेंट , सेक्टर 19-बी, द्वारका, नई दिल्ली- 110075

मोबाइल : 8800606550